ARYAN | Page No. | Date / /

अधिगम निर्योग्यता का उपचार

TREATMENT OF LEARNING DISABILITY.

अधिगम निर्योग्यता के उपचार हेतु निम्न विधियों का उपयोग किया जाता है -

1. व्यवहारिक निर्देशन विधि (Behavioural Guidance Method)

व्यवहारिक निर्देशन विधि का उपयोग बच्चों के शैक्षिक वातावरण के साथ विद्यालयों में दिशा निर्देश स्टेकेन्स (1970) द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनके अनुसार इस विधि के उपयोग के लिए चार चरणों का अनुपालन आवश्यक है -

1. उस व्यवहार को लक्ष्य बनाना जिसका परिमार्जन किया जाना हो।

2. लक्ष्य केन्द्रित व्यवहार का प्रत्यक्ष और बार-बार मापन करना।

3. संस्था से उन दशाओं को न्यून करने अथवा समाप्त करने का आग्रह करना

जो उसके वास्तविक व्यवहार में बाधक हो।

4. व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों को बार-बार आकलित कर उनका व्यावहारिक उपयोग करना

इस विधि के अनुप्रयोग में परिमार्जन, मॉडल, पुरस्कार, और अनावश्यक दशा का नियंत्रण आवश्यक भूमिका अदा करते है। ब्लैकनिप एवं बामगार्टनर (1982) ने इस विधि के अनेक अनुसन्धान पत्र प्रस्तुत किये। उनके अनुसार अधिगम नियोग्य बच्चों को उन परिस्थितियों से यदि अलग कर दिया जाए जो उनके शैक्षिक विकास को बाधित करती है, तो अधिगम नियोग्यता की समस्या से मुक्ति पायी जा सकती है। परिवेश के निरसन की एक जटिल समस्या निदानकर्ताओं के समक्ष है कि परिणामों के आधार पर यदि मॉडल शिक्षण (Model Teaching) को प्रस्तुत की जाए तो निष्पादन पर निषेधात्मक प्रभावकारी दशाओं पर विजय प्राप्त

की जा सकती है। गोटिंजर ने (1982) में इस क्रियात्मक समस्या समाधान पर अपना ध्यान केन्द्रित कर समाधान की पृष्ठभूमि प्रस्तुत कि जाए तो गणित और अध्ययन की प्रत्यक्ष निर्देशन पद्धति (Direct Instruction System of Arithmatic and Reading) कहा गया है। इस विधि के द्वारा 45% से 85% तक सफलता प्राप्त हुई है।

2. संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन (Cognitive Behaviour Modification)

संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन विधि का अधिगम नियोग्यता पर उपयोग में सर्वाधिक सराहनीय और महत्वपूर्ण कार्य कुछ विद्वानों द्वारा किए गए है, जिनमें मुख्य है - वुटको-वास्की एवं बिलांग, पर्ल, ब्राइन, डनाही, डगलस, हालाहन एवं नीडलर, गैरिस एवं मायर्स, बिन्स। इस विधि द्वारा अध्ययन हेतु निम्न पक्षों पर बल देना आवश्यक है -

(i) संवेगशीलता को न्यून करना – संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन के व्यावहारिक मानदण्ड पर अनुक्रिया के स्तर पर संवेगशीलता को कम करना यद्यपि कठिन है, परन्तु असंभव नहीं, कुछ विद्वानों ने यह पाया कि यदि विस्तृत प्रशिक्षण तकनीक का उपयोग किया जाए तो इस प्रकार नियंत्रण संभव है। मैकेनहम एवं गुडमैन ने स्व-निर्देशन उपाय पर बल दिया। इनके अनुसार स्व-निर्देशन में मॉडल व्यवहार का प्रमुख हाथ होता है और इस व्यवहार के माध्यम से अनुक्रिया दक्षता समस्या पर नियंत्रण किया जा सकता है। काल-सेन इपिस्टाइन और सिलवर ने अधिगम निर्योग्य के स्व-निर्देशन और मॉडल को एक साथ लेकर अध्ययन प्रारम्भ किया, इन्होंने 9-12 वर्ष के बच्चों, जो अनुक्रिया में संवेगशीलता व्यक्त करते थे का चयन किया। स्व-निर्देशन और मॉडल को संयुक्त रूप से प्रशिक्षण के चुना, इस विधि से प्रशिक्षण देने पर इन्होंने पाया कि अधिगम निर्योग्य बच्चों को यदि सही निदान के बाद

समग्र प्रशिक्षण दिया जाए तो अधिगम नियोग्य के अनुक्रिया मानदण्डों की कमियों पर नियंत्रण संभव है। ऐसा ही प्रयोग 6-13 वर्ष के बच्चों के प्रशिक्षण पर भी किया गया और पाया कि स्व-निर्देशन एवं स्व-प्रबलन प्रशिक्षण समस्याओं पर अधिक नियंत्रण संभव है।

(ii) लक्ष्योन्मुख व्यवहार पर बल देना -

अतिक्रियाशीलता अधिगम नियोग्य बच्चों की प्रमुख समस्या है। अतिक्रियाशीलता का प्रथम-चरण पर आभास हो जाता है। कारण, शिक्षक जब ऐसे बच्चों के बारे में शिक्षकों द्वारा गहन बातचीत की जाती है, तो समस्या को प्रमुखता से प्रस्तुत करते हैं, जब ऐसे बच्चों के बारे में अपना मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं तो इस समस्या की प्रमुखता को देखते हुए यह पाते हैं कि ये बच्चे कक्षा में मन से नहीं पढ़ता है, ठीक से अध्ययन सामग्री को याद नहीं करता है और कार्य निष्पादन में प्राय: अतिशीघ्रता व्यक्त करता है। ऐसे बालकों को रचनात्मक व्यवहार

परिमार्जन विधि का सहारा लिया और स्व-निर्देशन द्वारा लक्ष्योन्मुख व्यवहार अभिप्रेरणा प्रदान किया। 2 घंटे का प्रशिक्षण प्रत्येक प्राथमिक शाला में 3 माह तक दिया गया, परिणामतः अपेक्षाकृत विधेयात्मक रहा। ~~परिणाम~~ ये यही प्रशिक्षण शिक्षकों ऊँची कक्षा के बच्चों पर भी ~~कराये~~ कराये गये तथा परिणाम अनुकूल रहा। ऐसा प्रशिक्षण मन्द बुद्धि बालकों पर भी किया गया और परिणाम विधेयात्मक पाया गया। ऐसा पाया गया कि अगर शिक्षक द्वारा सप्ताह में 4 दिन उनके कार्यों पर प्रबलन दिया जाये तो अधिगम निर्योग्यता पर नियंत्रण संभव है।

(iii) गणितीय क्रियाओं के समाधान पर उन्मुखता

संज्ञानात्मक व्यवहार परिमार्जन विधि का उपयोग अधिगम निर्योग्यता के समाधान के लिए किया गया और गणितीय समस्या यद्यपि अधिगम निर्योग्य की एक प्रमुख समस्या होती है इसलिए इसमें भी स्व-निर्देशन विधि का

अनुप्रयोग किया जाता है।

(iv) अध्ययन शैली पर सक्रिय बल - प्राय: यह देखा गया कि अधिगम नियोग्य वाक्य उच्चारण में कभी-कभी किसी अक्षर अथवा शब्द का भी लोप कर लेते हैं, इसलिए ध्यानपूर्वक इन कमियों का अभिलेख तैयार कर प्रशिक्षण की योजना बनानी चाहिए। इस समस्या के समाधान में मूल रूप से प्रक्रिया प्रशिक्षण ही आवश्यक है।

(v) लेखन आयामों पर निर्देशन - वेरिटर एवं स्कार डामालियों ने अपने अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया कि यदि बच्चों के लेखन कौशल पर ध्यान केन्द्रित किया जाय तो उन बच्चों पर नियंत्रण संभव है। इस स्तर पर इन लोगों ने चरणबद्ध प्रशिक्षण पर बल दिया। इन अध्ययन कर्ताओं ने यद्यपि स्व- निर्देशन विधि का उपयोग नहीं किया परन्तु इस बात पर बल दिया कि यदि लेखन के विभिन्न आयामों पर ध्यान देकर प्रशिक्षण दिया जाय तो परिणाम अनुकूल प्राप्त होंगे इस दिशा में ~~विद्ये~~

ARYAN Page No. Date

विधेयात्मक परिणाम प्राप्त किया और अ
अध्ययन 'कहानी लेखन' कला के नाम से
जाना जाता है।